SAI | SÜDASIEN-INSTITUT
SOUTH ASIA INSTITUTE

UNIVERSITÄT HEIDELBERG
ZUKUNFT SEIT 1386

'इक्कीसवीं सदी का हिंदी-साहित्य'

डॉ पंकज पराशर

हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य का मुख्य स्वर सुनाने के लिए हमें वर्ष 2000 के बाद की परिस्थितियों को ग़ौर से देखना होगा, क्योंकि 'नव उदारवाद' ने अपना असली मनुष्य-विरोधी रूप सन् 2000 के बाद ही दिखाया है। आज सत्ता और पूँजी का गठजोड़ लोकतांत्रिक मूल्यों और जन-प्रतिरोध के स्वर को कमज़ोर कर रहा है। इसने हिंदी के लेखकों के सामने अनेक चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं।

अपने व्याख्यान में डॉ पराशर नई सदी के हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में इन मुद्दों पर अपना रोचक विश्लेषण प्रस्तुत करेंगे।

डॉ पंकज पराशर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के वरिष्ठतम सहायक आचार्य हैं। वे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित और भारत सरकार की साहित्य अकादेमी के परामर्श मंडल के सदस्य हैं।

तिथि: बुधवार, 14 नवंबर, 2018
स्थान: दक्षिण एशिया संस्थान, कमरा संख्या: 317
समय: अपराह्न 4 बजे

Im Neuenheimer Feld 330, D-69120 Heidelberg
Tel.: +49 (0) 62 21/54 -8900,
Fax: +49 (0) 62 21/54 -4998
E-mail: info@sai.uni-heidelberg.de